ब्रिटिश काल पर किताब के लिए शशि थरूर को साहित्य अकादमी पुरस्कार

नंदकिशोर आचार्य समेत 22 लेखकों का भी चयन

एजेंसी | नई दिल्ली

साहित्य अकादमी ने 23 भाषाओं में योगदान के लिए साहित्य पुरस्कारों की घोषणा कर दी है। कांग्रेस सांसद शशि थरूर को ब्रिटिश काल पर अंग्रेजी में लिखी किताब 'एन एरा ऑफ डार्कनेसः द ब्रिटिश एम्पायर इन इंडिया' के लिए यह पुरस्कार दिया जाएगा। इनके अलावा हिंदी के साहित्यकार नंद किशोर आचार्य, उर्दू के शाफे किदवई समेत 22 साहित्यकारों अवार्ड दिया जाएगा।

दैनिक ~~सन्देश~~ जागरण P-13 dt 19-12-2019

शशि थरूर समेत 23 लेखकों को मिलेगा साहित्य अकादमी पुरस्कार

जागरण संवाददाता, नई दिल्ली : राजनेता और लेखक शशि थरूर और नाटककार नंद किशोर आचार्य समेत 23 लेखकों को इस वर्ष के साहित्य अकादमी पुरस्कार के लिए चुना गया है। आगामी 24 फरवरी को दिल्ली में इन सभी को ताम्र पत्र और एक लाख रुपये के नकद पुरस्कार के साथ सम्मानित किया जाएगा। बुधवार को साहित्य अकादमी ने इन नामों की घोषणा की।

थरूर को उनकी अंग्रेजी में लिखी पुस्तक 'एन इरा ऑफ डार्कनेस' के लिए पुरस्कृत किया जा रहा है, जबकि नंद किशोर आचार्य को उनकी हिंदी कविता 'छीलते हुए अपने को' के लिए यह पुरस्कार दिया जा रहा है। अकादमी के सचिव के श्रीनिवास राव ने बताया कि अध्यक्ष चंद्रशेखर कंबर की अध्यक्षता में इन पुरस्कारों का प्रस्ताव 23 भारतीय भाषाओं का प्रतिनिधित्व करने वाले निर्णायक मंडल और साहित्य अकादमी के कार्यकारी बोर्ड ने रखा।

शशि थरूर ● फाइल फोटो

> थरूर की लिखी अंग्रेजी पुस्तक 'एन इरा ऑफ डार्कनेस' में ब्रिटिश हुकूमत के अत्याचारों की चर्चा की गई है

इनमें सात कवि फुकन चंद्र बसुमतारी (बोडो), निलबा खांडेकर (कोंकणी), मनीष अरविंद (मैथिली), वी मधुसूदन नायर (मलयालम), अनुराधा पाटिल (मराठी), पेन्ना मधुसूदन (संस्कृत) व उपन्यास लेखन के लिए जयश्री गोस्वामी महंत (असमिया), एल बिरमंगल सिंह (मणिपुरी), चो. धर्मन (तमिल) और बंदि नारायण स्वामी (तेलुगु) को यह पुरस्कार मिल रहा है। छह लेखकों को लघुकथा श्रेणी के लिए चुना गया है जिनमें अब्दुल अहद हजिनी (कश्मीरी), तरुण कांति मिश्रा (ओडिया), कृपाल कजाक (पंजाबी), रामस्वरूप किसान (राजस्थानी), काली चरण हेंब्रम (संताली), और ईश्वर मुरजनी (सिंधी) शामिल हैं। वहीं, विजया (कन्नड़) और शफी किदवई (उर्दू) को उनके रचनात्मक गैर-कथा साहित्य, आत्मकथा और जीवनी पर लेखन के लिए पुरस्कृत किया जा रहा है। निबंध लेखन के लिए चिन्मय गुहा (बंगाली), ओम शर्मा जंडरी (डोगरी), और रतिलाल बोरिसगर (गुजराती) का नाम प्रतिष्ठित पुरस्कार के लिए चयनित किया गया है।

सम्मान न पाने वाले कम महत्वपूर्ण नहीं

पुरस्कार

नई दिल्ली | प्रमुख संवाददाता

साहित्यकार नंदकिशोर आचार्य ने कहा कि साहित्य अकादेमी सम्मान का अपना सामाजिक महत्व होता है। सम्मान मिलता है तो अच्छा लगता है। मगर, जिन्हें सम्मान नहीं मिला, उनका साहित्य कम महत्वपूर्ण नहीं है।

नंदकिशोर को उनकी कविता संग्रह 'छीलते हुए अपने को' के लिए साहित्य अकादेमी पुरस्कार से सम्मानित किया जाएगा। पुरस्कारों की घोषणा के बाद उन्होंने कहा, ' मुझे नहीं लगता कि सम्मान लेखक के साहित्यिक महत्व को ठीक से रेखांकित करते होंगे। बहुत बार अधिक महत्वपूर्ण लेखक बिना सम्मान के भी रह जाते हैं। यह एक प्रक्रिया है, जिसका नंबर आ गया, उसका चयन सम्मान के लिए हो जाता है। नंदकिशोर ने कहा कि उनकी कविता संग्रह में सभी तरह की कविताएं हैं। उनका मानना है कि कोई भी कविता हो, वह मनुष्य के आंतरिकीकरण की प्रक्रिया होती है।

खास बातें

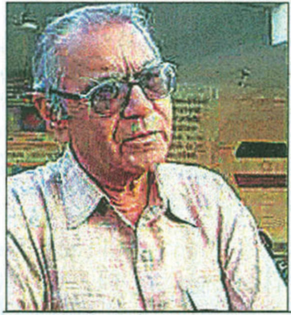

लेखन में जीवन के हर पहलू की झलक

- नंदकिशोर आचार्य का जन्म 1 अगस्त 1945 को राजस्थान के बीकानेर में हुआ
- वर्तमान में वह जयपुर में रहते हैं, उनका लेखन में जीवन के हर पहलू की झलक मिलती है
- राजस्थान साहित्य अकादेमी के सर्वोच्च मीरा पुरस्कार से भी सम्मानित हो चुके हैं

प्रमुख रचनाएं

- तथागत (उपन्यास)
- रचना का सच और सर्जक का मन (आलोचना),
- देहांतर और पागलघर (नाटक)
- वह एक समुद्र था, शब्द भूले हुए, आती है मृत्यु (कविता संग्रह)।

अपने भाषण से मिली किताब की प्रेरणा

साहित्य अकादेमी

नई दिल्ली | एजेंसी

कांग्रेस नेता व अंग्रेजी के लेखक शशि थरूर को जिस किताब के लिए साहित्य अकादेमी पुरस्कार से नवाजा जाएगा, उसकी नींव ईस्ट इंडिया कंपनी पर उनके भाषण से तैयार हुई थी।

ऑक्सफोर्ड यूनियन में दिए इस भाषण की भारत समेत कई देशों में सराहना हुई थी। थरूर की किताब में इस भाषण से जुड़े कई पहलू शामिल हैं। शशि थरूर को उनकी किताब 'एन इरा ऑफ डार्कनेस' के लिए साहित्य अकादेमी पुरस्कर प्रदान किया जाएगा। वर्ष 2016 में प्रकाशित यह किताब भारत में ब्रिटिश राज पर आधारित है। इस किताब की चर्चा पूरी दुनिया में हुई थी। भारत और ब्रिटेन में इस किताब के दो अलग-अलग वर्जन प्रकाशित किए गए थे। ब्रिटिश वर्जन की शुरुआती 50 हजार प्रतियां छह महीने में बिक गई थीं।

दोस्त ने दिया किताब लिखने का सुझाव : मई, 2015 में शशि थरूर को ऑक्सफोर्ड यूनियन में ब्रिटशकाल पर विचार व्यक्त करने के लिए बुलाया गया था। तब उन्होंने कुछ ऐसा भाषण दिया, जिसकी चर्चा दुनियाभर में हुई। किताब में वर्ष 1600 से 1947 तक के इतिहास का जिक्र है।

राजनायिक से नेता बने

- **09** मार्च, 1956 को जन्में शशि थरूर पूर्व भारतीय राजनयिक हैं
- **2006** में संयुक्त राष्ट्र के महासचिव पद के लिए चुनाव भी लड़ा
- संयुक्त राष्ट्र में कई अहम पदों पर रहे, वर्ष 2007 में पद छोड़ा, मार्च 2009 में केरल के तिरुवनंतपुरम से कांग्रेस पार्टी के टिकट पर चुनाव जीता।

साहित्य अकादेमी पुरस्कार मिलना मेरे लिए गर्व की बात है। कोई भी सम्मान या पुरस्कार संबंधित व्यक्ति को उसके कार्यों की याद दिलाता है। मुझे खुशी है कि साहित्य अकादेमी ने मेरे लेखन को सम्मान के लायक समझा।

-शशि थरूर, कांग्रेस नेता व लेखक

19 किताबें लिख चुके हैं

शशि थरूर अभी तक कुल 19 किताबें लिख चुके हैं। इनमें 'एन इरा ऑफ डार्कनेस' के अलावा 'मैं हिंदू क्यों हूं?' और द पैराडॉक्सीकल प्राइम मनिस्टर, नेहरू: द इन्वेंशन ऑफ इंडिया जैसी किताबें शामिल हैं।

'पुरस्कार राशि हिंसा पीड़ितों को'

गुवाहाटी। उपन्यासकार और असम गण परिषद की पूर्व सांसद जयश्री गोस्वामी महंत ने कहा कि साहित्य अकादमी पुरस्कार पाने की खबर सुनकर उन्हें ज्यादा खुश नहीं हुई।

नागरिकता कानून पर विरोध प्रदर्शन में हिंसा ने खुशी के इन पलों को फीका कर दिया। उन्होंने कहा कि पुरस्कार की इस राशि से असम में प्रदर्शन के दौरान मारे गए लोगों के परिवारों की मदद की जाएगी। असम के पूर्व मुख्यमंत्री प्रफुल्ल कुमार महंत की पत्नी जयश्री को असमिया में उनके उपन्यास चाणक्य के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार दिया जाएगा।